भौतिकवाद

प्रिलिम्स के लिये:

भौतिकवाद, लोकायत, चार्वाक, भौतिकवाद, और जड़वाद, अस्तित्व की भौतिक प्रकृति, डेमोक्रिटस और एपिकुरस का परमाणुवाद

मेन्स के लिये:

भौतिकवाद, भारत और विश्व के नैतिक विचारकों और दार्शनिकों का योगदान

स्रोत: द हिंदू

चर्चा में क्यों?

भौतिकवाद, जो प्राचीन उत्पत्ति से जुड़ा है, एक सुसंगत ढाँचा प्रदान करता है जो अस्तित्व के आधार के रूप में **पदार्थ पर केंद्रित** है।

भौतिकवाद क्या है?

- **परिचय:**
  - भौतिकवाद का दावा है कि **सारा अस्तित्व (Existence) पदार्थ से उत्पन्न होता है और मूल रूप से पदार्थ से** बना है।
  - **यह गैर-भौतिक संस्थाओं के अस्तित्व का खंडन करता है,** अन्य सभी घटनाओं, यहाँ तक कि बुद्धि को अंतर्निहित प्राकृतिक कानूनों का पालन करते हुए पदार्थ के परिवर्तन या उत्पाद के रूप में मानता है।
- **ऐतिहासिक संदर्भ:**
  - भौतिकवाद की जड़ें दुनिया भर के प्राचीन दर्शनों में हैं। भारत में इसे अन्य नामों के अलावा **लोकायत (Lokāyata), चार्वाक (Chárváka), भौतिकवाद (Bhautikvad) और जड़वाद (Jadavāda)** में अभिव्यक्ति मिली।
    - लोकायत, जिसका अर्थ है लोगों का दर्शन, सांसारिकता और सहज भौतिकवाद पर ज़ोर देता है। **लोकायत के प्रणेता बृहस्पति, अजिता और जाबाली जैसे दार्शनिक थे**।
    - **चार्वाक सुखवाद पर प्रकाश** डालता है, यह विश्वास कि आनंद जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ है।
    - **भौतिकवाद अस्तित्व की भौतिक या भौतिक** प्रकृति पर केंद्रित है।
    - जड़वाद अस्तित्व की भौतिक जड़ों की तलाश करने के भौतिकवादियों के झुकाव को दर्शाता है।
  - प्रारंभिक यूनानी दार्शनिकों ने भी विशेष रूप से **डेमोक्रिटस और एपिकुरस के परमाणुवाद के माध्यम से ब्रह्मांड के लिये भौतिकवादी स्पष्टीकरण का अनुसरण** किया।
  - विभिन्न संस्कृतियों में विभिन्न नाम भौतिकवादी दर्शन को दर्शाते हैं।
- **विचार का विकास:**
  - प्राचीन भौतिकवादियों ने चार शास्त्रीय तत्त्वों (महाभूतों) पर विचार किया तथा 'स्वभाव' अथवा स्व-निर्माण के माध्यम से वास्तविकता की विविधता को समझाया।
    - चार मूलभूत तत्त्व अग्नि (Fire), अप् (Water), वायु (Wind) तथा पृथ्वी (Earth) माने गए।
  - उन्होंने दैवीय विधान को अस्वीकार कर दिया तथा केवल **दृश्यमान/प्रत्यक्ष वास्तविकता से परे किसी भी संसार के अस्तित्व से इनकार किया**, जिसका अर्थ है कि वे घटनाओं या ब्रह्मांड की नियति को निर्देशित करने वाली उच्च शक्ति में विश्वास नहीं करते थे।
  - उन्होंने एकमात्र वास्तविकता के रूप में अनुभवजन्य वास्तविकता के महत्त्व पर ज़ोर देते हुए **प्रत्यक्ष रूप से अवलोकित अथवा अनुभव किये जा सकने वाले संसार से परे** किसी भी अन्य संसार के अस्तित्व को खारिज़ किया।
- **भौतिकवाद की नैतिकता:**
  - कथित तौर पर **भोगी जीवनशैली को बढ़ावा** देने के लिये भौतिकवाद की नैतिकता को आलोचना का सामना करना पड़ा, जैसा कि संस्कृत की उक्ति **"यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्"** में परिलक्षित होता है, जिसका अर्थ है **"जब तक आप जीवित हैं, सुख से जिएँ"**।
  - भौतिकवाद ने किसी भी **सदाचार अथवा नैतिक सिद्धांतों को स्वीकार नहीं किया** जो धार्मिक अथवा आध्यात्मिक सिद्धांतों से प्राप्त हुए थे।
  - भौतिकवाद ने नैतिकता के अस्तित्व से इनकार नहीं किया अपितु तर्क दिया कि **नैतिकता मानवीय तर्क तथा अनुभव पर आधारित होनी**

चाहिये एवं नैतिकता का लक्ष्य स्वयं व दूसरों के लिये आनंद को अधिकतम करना एवं पीड़ा को कम करना होना चाहिये।

भौतिकवाद का दार्शनिक महत्त्व क्या है?

- भौतिकवाद एक व्यापक विश्व दृष्टिकोण प्रदान करता है जो अनुभवजन्य अवलोकन और **अस्तित्व को नियंत्रित करने वाले प्राकृतिक कानूनों** पर ज़ोर देता है।
- यह **धार्मिक हठधर्मिता** को चुनौती देता है और मूर्त, अवलोकन योग्य घटनाओं के आधार पर वास्तविकता की आलोचनात्मक विश्लेषण को प्रोत्साहित करता है।
- इसने **सामाजिक मानदंडों और परंपराओं को चुनौती देते हुए विचार की स्वतंत्रता** का समर्थन किया।
- समय के साथ प्रमुख दर्शन में बदलाव के बावजूद भौतिकवादी विचार कायम हैं और समकालीन वैज्ञानिक जाँच को आकार दे रहे हैं, विशेषकर वास्तविकता की मौलिक प्रकृति को समझने में।
- इसका प्रभाव संस्कृतियों और युगों तक फैला हुआ है, जो **ब्रह्मांड** की तर्कसंगत खोज को प्रोत्साहित करता है और अनुभवजन्य अवलोकन तथा समझ के पक्ष में **अलौकिक व्याख्याओं को खारिज़ करता है।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/materialism